© JUL 2018 | IRE Journals | Volume 2 Issue 1 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV2I1-1716298

बुन्देलखण्ड के लोकसाहित्य एवं लोकगीतों में श्रीराम: एक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विमर्श

डॉ सीमा श्रीवास्तव

प्रवक्ता – हिंदी, पं. दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय, महरौनी (ललितपुर) उ.प्र.

शोध सार- बुन्देलखण्ड का साहित्य एवं लोकगीत भारतीय लोक-परम्परा का अमूल्य धरोहर हैं। यह शोध-पत्र बुन्देलखण्ड के लिखित साहित्य (केशवदास, तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त) एवं अलिखित लोकगीतों (सोहर, विवाह, फाग, वनवास, केवट, शबरी आदि) में श्रीराम के बहुआयामी व्यक्तित्व का विश्लेषण करता है। अध्ययन में ओरछा के 'राजा राम' की परम्परा, 'गारी' गीतों की हास्य-व्यंग्य शैली, केवट-प्रसंग की भक्ति-विवशता, तथा बुन्देली फागों में शृंगार और भक्ति के अद्वितीय समन्वय को रेखांकित किया गया है। निष्कर्षतः बुन्देलखण्ड के साहित्य में राम केवल देवता नहीं, बल्कि 'लाल' (पुत्र), 'पाहुन' (दामाद), 'राजा', 'योद्धा' एवं 'तपस्वी' के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

प्रमुख शब्द- बुन्देलखण्ड, बुन्देली लोकगीत, श्रीराम, केशवदास, रामचंद्रिका, साकेत, सोहर, फाग, ओरछा, केवट, गारी

I. प्रस्तावना

डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में, "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं।"[1] बुन्देलखण्ड, जिसे भारत का हृदय स्थल कहा जाता है, अपनी लोकसंस्कृति एवं साहित्यिक परम्परा के लिए विश्वविख्यात है। इस क्षेत्र की विशिष्टता यह है कि यहाँ श्रीराम केवल पूज्य देवता नहीं, बल्कि जन-जीवन के अभिन्न अंग हैं। डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "बुन्देलखण्ड की माटी में जो कठोरता और स्नेह दोनों है, वह उसके साहित्य में भी उतर आया है।"[2]

यह शोध-पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अभिकल्पित है :

1. बुन्देलखण्ड के लिखित साहित्य (रीतिकालीन एवं आधुनिक) में राम के स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. बुन्देली लोकगीतों (सोहर, विवाह, फाग, वनवास, संस्कार) में रामकथा के प्रसंगों की पहचान करना।
3. इन गीतों की काव्यगत एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का विवेचन करना।
4. बुन्देलखण्डी लोक-मानस में राम के 'मधुर्य' एवं 'वात्सल्य' भक्ति-रूप को स्पष्ट करना।

II. शोध-विधि एवं सामग्री

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक शोध-विधि पर आधारित है। डेटा के प्राथमिक स्रोत के रूप में बुन्देलखण्ड क्षेत्र (झाँसी, ओरछा, चित्रकूट, बाँदा, निवाड़ी) से संकलित मौखिक लोकगीतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में केशवदास की 'रामचंद्रिका', तुलसीदास का 'रामचरितमानस', मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत', तथा बुन्देलखण्ड से सम्बद्ध लोक-साहित्य के शोध-प्रबन्ध एवं अकादमिक पत्रिकाएँ शामिल हैं। विश्लेषण हेतु प्रासंगिकता, प्रचलन एवं प्रतिनिधित्व को मानदण्ड बनाया गया।

III. दार्शनिक पृष्ठभूमि: बुन्देलखण्ड और राम का आत्मिक सम्बन्ध

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक संरचना – पहाड़, सघन वन, नदियाँ एवं बलुई मैदान – ने यहाँ के साहित्य को विशिष्ट गम्भीरता एवं जीवन्तता प्रदान की है। इस क्षेत्र में राम केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि बुन्देलखण्डी अस्मिता के रक्षक हैं। यहाँ भक्ति की 'सख्य' (मित्रता) और 'वात्सल्य' (पुत्र-प्रेम) भाव की प्रधानता है। साहित्यकारों एवं जन-मानस ने राम को अपने परिवार का अभिन्न अंग माना है।

IV. ओरछा के 'राजा राम': साहित्य और जनश्रुति का मिलन

बुन्देलखण्ड में राम-परम्परा का केन्द्र ओरछा है, जो झाँसी से 17 किलोमीटर दूर मध्यप्रदेश के निवाड़ी जिले में स्थित है। यहाँ प्रभु श्रीराम राजा के रूप में विराजमान हैं। लोक-श्रुति के अनुसार :

© JUL 2018 | IRE Journals | Volume 2 Issue 1 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV2I1-1716298

राजा मधुकर शाह की रानी कुंवर गनेश,
अवधपुरी से ओरछा लाई अवध नरेश।[3]

रानी कुंवर गनेशी की अनन्य भक्ति एवं हठ से आकृष्ट होकर ही श्रीराम अवध से ओरछा पधारे। स्थानीय कवियों ने रानी की अयोध्या यात्रा एवं सरयू के किनारे उनकी तपस्या का करुणापूर्ण वर्णन किया है। यहाँ के काव्य में राम को 'अयोध्या नरेश' से अधिक 'ओरछा नरेश' के रूप में महिमामण्डित किया गया है। ओरछा के भजन –

"मोरे राजा राम, ओरछा में विराजे"[4]
बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक पहचान बन चुके हैं।

V. लिखित साहित्य में राम: केशवदास से मैथिलीशरण गुप्त तक

5.1 आचार्य केशवदास और 'रामचंद्रिका'

बुन्देलखण्ड के सबसे प्रतिष्ठित रीतिकालीन दरबारी कवि आचार्य केशवदास (1555-1617 ई.) ने सन् 1601 में 'रामचंद्रिका' की रचना की। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे "कठिन काव्य का प्रेत" कहा है[5], तथापि रामकथा के विकास में इसका स्थान अतुलनीय है।

संवाद शैली: केशव ने राम-रावण, अंगद-रावण एवं हनुमान-लंका के जो संवाद लिखे हैं, वे बुन्देलखण्ड की राजनीतिक चतुरता एवं वाक्पटुता को दर्शाते हैं। केशव के राम मूक आदर्श न होकर वाक्-कुशल एवं नीति-निपुण हैं।

प्राकृतिक वर्णन: पंचवटी का वर्णन करते हुए केशवदास बुन्देलखण्ड की प्रकृति को ही राम की सेवा में उपस्थित दिखाते हैं। डॉ॰ नगेन्द्र के शब्दों में, "केशव के राम बुन्देलखण्ड के राम हैं, अयोध्या के नहीं।"[6]

5.2 गोस्वामी तुलसीदास और बुन्देलखण्ड

यद्यपि तुलसीदास ने अपनी रचनाएँ अवधी में कीं, तथापि उनके जीवन का बड़ा हिस्सा बुन्देलखण्ड (चित्रकूट एवं राजापुर) में बीता। 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड में चित्रकूट का सजीव चित्रण उनके बुन्देलखण्ड-प्रेम को दर्शाता है:

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुबीर॥[7]

यह पंक्तियाँ बुन्देलखण्ड की लोक-संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

5.3 आधुनिक काल: राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत'

झाँसी की धरती ने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) को दिया। उनकी महाकाव्यात्मक रचना 'साकेत' रामकथा का आधुनिक व्याकरण है। गुप्त जी ने उर्मिला के माध्यम से बुन्देलखण्ड की उन नारियों की व्यथा को स्वर दिया जो चुपचाप बलिदान देती हैं। उनके राम कहते हैं –

"सुन्दर यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"[8]
यह विचार बुन्देलखण्ड की कर्मठता एवं भौतिक-नैतिक दृष्टि का प्रतीक है।

VI. बुन्देली लोकगीतों में राम: प्रसंगानुसार विश्लेषण

6.1 जन्म के गीत: बुन्देली 'सोहर'

बुन्देलखण्ड में पुत्र जन्म पर 'सोहर' गाए जाते हैं। ये गीत कौशल्या के हर्ष, राम के जन्म और दशरथ के आँगन की खुशियों का वर्णन इस प्रकार करते हैं मानो राम का जन्म बुन्देलखण्ड के किसी गाँव में हुआ हो। सोहरों में वर्णन मिलता है कि राम के जन्म पर 'नेग' माँगने के लिए बुन्देलखण्डी जातियाँ – नाइन, धोबिन, सुनारिन – आ रही हैं :

"जुग-जुग जियें ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो..."[9]
इन गीतों में राम को 'नज़र' से बचाने के लिए काजर लगाने और राई-लोन उतारने की बुन्देली रस्मों का उल्लेख प्रमुखता से मिलता है। (देखें परिशिष्ट : "अंगना में बाजे बधैया", "जशोदा के महलन बेग चलो री")

6.2 संस्कार-गीतों में राम: मुण्डन और जनेऊ

मुण्डन एवं यज्ञोपवीत के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की चौकड़ी का वर्णन होता है। लोकगीतकार गाता है कि राम की छवि देखकर सूर्यदेव भी अपना रथ रोक लेते हैं। ये गीत भाईचारे और पारिवारिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हैं।

6.3 राम-विवाह और 'गारी' (हास्य-व्यंग्य गीत)

बुन्देली लोकगीतों का सबसे रोचक हिस्सा राम-सीता विवाह है। यहाँ राम 'पाहुन' (दामाद) बनकर आते हैं। बुन्देलखण्ड में दामाद और समधियों को 'गारी' (प्रेमपूर्ण मज़ाक के गीत) देने की अनूठी परम्परा है। लोकगीतों में जनकपुर का दृश्य

© JUL 2018 | IRE Journals | Volume 2 Issue 1 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV2I1-1716298

ऐसा चित्रित किया जाता है मानो वह बुन्देलखण्ड का ही कोई राज्य हो। जब राम भोजन करने बैठते हैं, तो सखियाँ व्यंग्यपूर्ण गीत गाती हैं:

"राम लला को देखन आए, सखी री सब नर-नारी..."[10]
वे व्यंग्य करती हैं कि कैसे इतने सुकुमार राम ने भारी शिव-धनुष तोड़ डाला। (देखें परिशिष्ट : विवाह-गीत, बरात-भोजन)

6.4 धनुष-भंग और सीता का संदेह
जब सीता यज्ञशाला में श्रीराम के कोमल शरीर को देखती हैं, तो उनके मन में शिव-धनुष तोड़ पाने को लेकर सन्देह उत्पन्न होता है :
हरि की पतरी कमर, नाजुक बड़ूयाँ, धनुष कैसे तोड़े सड़ूयाँ।
कोमल गात श्री भगवान, कर में सोहत लाल कमान,
भारी महादेव को बान, हारे बड़े-बड़े बलवान…[11]
यहाँ विरोधाभास अलंकार का सहज प्रयोग हुआ है – एक ओर राम की कोमलता, दूसरी ओर शिव-धनुष की कठोरता।

6.5 केवट प्रसंग: भक्ति और विवशता का द्वन्द्व
केवट और राम का संवाद बुन्देली लोकगीतों में अत्यन्त सरल और मर्मस्पर्शी है:
पवनती मोरी तो मसे सौ-सौ बार हे हरि।
तीन पग धोए न करहौ गंगा पार मैं हरि।
चाहे तार दो हरि, चाहे मार दो हरि।[12]
केवट की धृष्टता एवं अनन्यता एक साथ दर्शित होती है। वह राम से प्रेम-विवशता में मोल-भाव कर बैठता है। यह बुन्देली लोक-भक्ति की विशेषता है।
6.6 शबरी-प्रसंग: भक्ति में बाह्य-शुद्धि का निराकरण
शबरी के जूठे बेर खाने का प्रसंग बुन्देली लोकगीत में अत्यन्त सहजता से आया है :
शबरी के खट्टे मीठे बेर, बेर बड़े मीठे लगे।
एक मुट्ठी बेर शबरी, रामाजी को दीन्ही, राम जी ने खाए लिये बेर।[13]
राम द्वारा जूठे बेर ग्रहण करना भक्ति में भावना की प्रधानता का प्रतीक है।

6.7 वनवास और करुणा रस के गीत
राम के वनवास पर बुन्देली महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीत करुणा रस की पराकाष्ठा हैं। बुन्देली गीतों में वन की कंकड़-पत्थरों वाली राहों का वर्णन मिलता है, जो बुन्देलखण्ड के पठारी रास्तों की स्मृति दिलाता है।
6.8 राम-रावण संवाद: बुन्देली कवि चन्द्रप्रकाश
युद्ध-क्षेत्र में राम और रावण के बीच इशारों में हुआ यह संवाद बुन्देली कवि चन्द्रप्रकाश ने अत्यन्त प्रहारात्मक शैली में लिखा है
रावण: बसी बसाई लंका तुमने दीनानाथ मिटाई। काहो तुम्हें शरम न आई?
राम: अबला जान अकेली तुमने छल से सिया चुराई।[14]
यह मर्यादा और अहंकार के शाश्वत द्वन्द्व का साहित्यिक दस्तावेज है।

6.9 फाग साहित्य में राम (बुन्देली फाग)
फाल्गुन में जब टेसू के फूल खिलते हैं, तो बुन्देलखण्ड फागों से गूँज उठता है। ईसुरी जैसे महान लोक-कवि ने राम-सीता की होली का वर्णन किया है। फागों में राम और सीता एक-दूसरे पर गुलाल फेंकते हैं। यहाँ राम भगवान नहीं, बल्कि फागुन का आनन्द लेने वाले युवक हैं। नगाड़ों की थाप पर 'राम नाम' की फाग गाई जाती है, जो अध्यात्म को लोक-रंजन से जोड़ती है। (देखें परिशिष्ट : "बधद्यां बाजै माधौ जी के")

6.10 सीता-निर्वासन और बुन्देली संवेदना
बुन्देली लोकगीतों ने सीता के प्रति अगाध सहानुभूति दिखाई है। राम द्वारा सीता के त्याग पर लोकगीतकारों ने राम से प्रश्न भी पूछे हैं। लव-कुश के जन्म और उनके द्वारा राम की सेना को पराजित करने के गीतों में बुन्देलखण्डी वीरता और पुत्र-मोह का अद्भुत संगम दिखता है।

6.11 रामराज्य की परिकल्पना
बुन्देली गीतों में 'रामराज्य' का अर्थ है – वह राज्य जहाँ कुएँ, बावड़ियाँ और बाग-बगीचे हों, जहाँ कोई भूखा न सोए। यह एक आदर्श समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। वनवास के पश्चात राम के राजतिलक पर जनता प्रार्थना करती है:
राम जू धनी हो मोरे राम जू धनी।
इस जादू नगरी से बचवे, जिनको राम बचावें…
तुमरे द्वारे की देहरिया मोरे राम जू धनी।[15]

VII. वीर रस के काव्यों में राम

बुन्देलखण्ड की तासीर वीरता की है। यहाँ आल्हा-ऊदल की परम्परा में राम को एक अजय योद्धा के रूप में सम्मान दिया गया है। बुन्देली कवियों के अनुसार, राम का धनुष उठाना अन्याय के विरुद्ध युद्ध का शंखनाद है। लोक-गाथाओं में रावण का वध प्रतिशोध न होकर धर्म-रक्षा का आख्यान है।

© JUL 2018 | IRE Journals | Volume 2 Issue 1 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV2I1-1716298

VIII. बुन्देली लोकगीतों की काव्यगत विशेषताएँ

1. भाषा: 'अकारान्त' शब्दों (बड़ूयाँ, कलड़्या, पड़्या) की प्रधानता, जो सुनने में अत्यन्त मधुर है।
2. प्रतीक-विधान: कमल, चकोर, बिजली, बादल, चाँद जैसे प्रतीकों का प्रयोग राम-सीता के सौन्दर्य-वर्णन हेतु।
3. सामूहिकता: गीत समूह में (विशेषकर महिलाओं द्वारा) गाए जाते हैं, जो सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं।
4. संवाद-शैली: राम-केवट, राम-सखियाँ, राम-रावण के बीच संवाद नाटकीयता उत्पन्न करता है।
5.स्थानीय यथार्थ: बुन्देलखण्ड के भोजन (लड्डू, मालपुए, आलू, रतालू), रीति-रिवाज (नेग, काजर, राई-लोन) एवं भौगोलिक परिवेश (पठार, कंकड़-पत्थर) का यथार्थ चित्रण।

IX. बुन्देलखण्ड के समकालीन साहित्य में राम

आज के बुन्देली कवि – जैसे श्री संतोष सिंह बुन्देला एवं अन्य स्थानीय साहित्यकार – रामराज्य की तुलना वर्तमान व्यवस्था से करते हुए व्यंग्य एवं सुधार की बात करते हैं। डॉ॰ सीमा श्रीवास्तव के अनुसार, "राम यहाँ के कवियों के लिए केवल अतीत नहीं, बल्कि भविष्य का आदर्श भी हैं।"[16] समकालीन बुन्देली पत्रिकाओं में राम-केन्द्रित रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं।

X. निष्कर्ष

बुन्देलखण्ड के साहित्य एवं लोकगीतों में श्रीराम एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। वे कहीं 'राजा' हैं, कहीं 'तपस्वी', कहीं 'योद्धा' तो कहीं 'दामाद'। बुन्देली साहित्य में राम :
- लिखित साहित्य में – केशव के 'रामचंद्रिका' से लेकर गुप्त के 'साकेत' तक – एक मर्यादित, कर्मठ एवं मानवीय चरित्र हैं।
- लोकगीतों में – सोहर से लेकर विदाई तक – वे बुन्देलखण्ड के 'लाल', 'पाहुन', और 'राजा राम' हैं।
बुन्देलखण्ड की माटी ने राम को केवल मन्दिर में बन्द नहीं रखा, अपितु उन्हें अपने गीतों, उत्सवों, फागों और वीरता के किस्सों में जीवित रखा है। यह साहित्य केवल धार्मिक दस्तावेज नहीं, बल्कि बुन्देलखण्ड के जन-मानस का हृदय है। राम यहाँ के साहित्य की आत्मा हैं, जो सदियों से सांस ले रही है। शोध निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड में राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम' से अधिक 'लोक पुरुषोत्तम' हैं।

XI. टिप्पणियाँ (उद्धरण)

[1] अग्रवाल, वासुदेव शरण, लोकगीत एवं संस्कृति, पृ. 12
[2] द्विवेदी, हजारीप्रसाद, बुन्देलखण्ड की लोक-चेतना, पृ. 15
[3] मौखिक लोकगीत, ओरछा क्षेत्र
[4] वही, ओरछा के भजन
[5] शुक्ल, रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 236
[6] नगेन्द्र, डॉ., रीतिकालीन कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 112
[7] तुलसीदास, गोस्वामी, रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा क्रमांक 134
[8] गुप्त, मैथिलीशरण, साकेत, पृ. 87
[9] मौखिक लोकगीत, झाँसी क्षेत्र
[10] वही, विवाह-गीत संग्रह, बाँदा
[11] वही, धनुष-भंग प्रसंग
[12] वही, केवट-प्रसंग
[13] वही, शबरी-प्रसंग
[14] चन्द्रप्रकाश (बुन्देली कवि), उद्धृत मौखिक परम्परा
[15] मौखिक लोकगीत, रामराज्य प्रार्थना
[16] श्रीवास्तव, सीमा, डॉ., बुन्देलखण्ड के समकालीन साहित्य में राम*, अप्रकाशित व्याख्यान, 2013

XII. ग्रन्थसूची (ग्रन्थ-सूची)

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण. लोकगीत एवं संस्कृति. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 1978.
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. बुन्देलखण्ड की लोक-चेतना. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 1982.
3. शुक्ल, रामचंद्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरीप्रचारिणी सभा, 1968.
4. नगेन्द्र, डॉ. रीतिकालीन कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1975.
5. तुलसीदास, गोस्वामी. रामचरितमानस. गोरखपुर: गीताप्रेस, संस्करण 2010.
6. गुप्त, मैथिलीशरण. साकेत. इलाहाबाद: साहित्य भवन, 1930 (पुनर्मुद्रण 1990).
7. केशवदास, आचार्य. रामचंद्रिका. (संपादक: विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) वाराणसी: हिन्दी प्रचारक संस्थान, 1965.
8. जैन, नेमिचन्द्र. मध्यकालीन हिन्दी लोकगीत. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1975.
9. शर्मा, रामकुमार. बुन्देली लोक साहित्य: एक अनुशीलन. झाँसी: बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010.

10. उपाध्याय, श्यामसुन्दर. हिन्दी लोकगीतों का इतिहास. वाराणसी: नागरीप्रचारिणी सभा, 1968.
11. श्रीवास्तव, सीमा, डॉ. बुन्देलखण्ड के साहित्य में राम: एक विहंगम दृष्टि (अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध सामग्री एवं व्याख्यान), 2013.
12. मौखिक स्रोत: ओरछा, झाँसी, चित्रकूट, बाँदा, निवाड़ी क्षेत्र के लोकगायकों एवं साहित्यकारों से संकलित, साक्षात्कार 2013-14

13. परिशिष्ट (प्रमुख लोकगीतों का मूल पाठ)

परिशिष्ट-1: अंगना में बाजे बधैया (सोहर)

अंगना में बाजे बधैया, बाजे हो बधैया यशोदा जी के द्वारे।
रार करें पानी में हिलोरें, खेले को माँगे जुहैया। यशोदा जी के द्वारे
तुम जिन सोच करो मनमोहन देहैं, चाँद त्याकें यशोदा के द्वारे
गोरी नंद गोरी यशोदा, तुम काय मोहन कारे। अंगना...